मातृ–पितृ वंदना

माता और पिता चरणों में, हम सब शीश झुकाते हैं।

उनके ऋण से उऋण हो सके, प्रभु से यही मनाते हैं।।

माता और पिता से बढ़कर, कोई भी भगवान नही।

उनकी कृपा दृष्टि पाये बिन, संतति का कल्याण नही।।

मातृ तुल्य गुरु नही जगत में, नही पिता से बढ़ त्राता।

जिनके आशीषों से मानव, जीवन उन्नत बन पाता।।

प्राणों को देकर भी उनका, ऋण न कदापि चुका सकते।

बस कृतज्ञता ज्ञापित करके, अपना शीष झुका सकते ।।

ईश्वर हमें शक्ति दे ऐसी, उनकी सेवा कर पायें।

कभी नही उनका ऋण भूले, चाहें प्राण चले जायें।।

नोट : प्रत्येक छात्र/छात्रा को कक्षाएं प्रारंभ होने के पूर्व होने वाली प्रार्थना सभा में नित्यप्रति उपस्थिति होना अनिवार्य है।

Shri Shakti Degree College, Sankhahari, Ghatampur, Kanpur Nagar (U.P.)
PRINCIPAL

Scanned with OKEN Scanner